प्रकाशन तिथि : 15 नवम्बर, 2020
प्रेषण तिथि : 19 नवम्बर, 2020

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 24 | अंक 17 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'श्रेष्ठ कार्य करें, पुनः अवसर मिलेगा'

(संघ प्रमुख श्री का प्रवास कार्यक्रम)

अभी हमने जो भजन सुना उसमें एक भक्त का आत्म निवेदन है परमेश्वर से। वह अपने आपको संसार के दायित्वों में इतनी व्यस्त पाती है कि परमेश्वर के गुण गाने कास, उसका स्मरण करने का, उसकी ओर बढ़ने की साधना करने का अवसर ही नहीं जुटा पाती लेकिन उसे यह अहसास सदैव बना रहता है कि वह जो करना है वह कर नहीं पाती और उसका यह अहसास ही महत्वपूर्ण है। उसका वह अहसास ही उसमें स्मरण जागृत करता है। उसे सदैव याद रहता है और इसीलिए वह प्रार्थना करती है कि परमेश्वर इस जन्म में एक गृहणी के दायित्व के कारण, जो आपका ही सौंपा हुआ है, मैं अपना सम्पूर्ण समय आपको नहीं दे पा रही हूं लेकिन अगले जन्म में आप मुझे मीरां बनाना, मुझे इस प्रकार की अनुकूलता प्रदान करना कि मैं केवल आपका ही स्मरण कर सकूं। अपने आपको आपके प्रति सम्पूर्ण समर्पित कर सकूं। ऐसी ही हमारी स्थिति होनी

चाहिए। हमारे सांसारिक दायित्व निर्वहन करते हुए हमें सदैव यह अहसास बना रहे कि हम संघ के हैं, निरन्तर संघ का स्मरण बना रहे और हम श्रेष्ठ कार्यों में संलग्न रहें और परमेश्वर से सदैव अनुकूलता की प्रार्थना करते रहें तो हमें वे अवश्य अवसर प्रदान करेंगे। हमारी श्रेष्ठ कार्यों में संलग्नता हमें अवश्य ही मानव जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि की ओर प्रवाहित करेगी। यदि ऐसा करते-करते शरीर छूट गया तो पुनः अवसर मिलेगा, फिर से यहीं आएंगे और अपनी अधूरी यात्रा को आगे बढ़ाएंगे।

9 नवम्बर को अपने जोधपुर प्रवास के दौरान जोधपुर संभाग के कार्यालय 'तनायन' में आयोजित स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि संसार में बदलाव लाने के लिए संसार के प्रवाह को श्रेष्ठता की ओर मोड़ने के लिए श्रेष्ठ लोगों की आवश्यकता होती है। लेकिन यह भी स्वाभाविक है कि श्रेष्ठ लोग कम ही होते हैं इसीलिए श्रेष्ठ लोगों की सदैव मांग बनी रहती है। इसीलिए हमें श्रेष्ठ बनना है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मानव-समस्या और समाधान

श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य 'यथार्थ गीता' से

।।ॐ।।

विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान एक धर्मशास्त्र भगवान् श्रीकृष्णोक्त श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य 'यथार्थ गीता' से संभव है।

विश्व की समस्याएं :

- रक्त रंजित आतंकवाद
- साम्प्रदायिक उन्माद
- रंग भेद
- स्त्रियों की दशा
- शोषण, आर्थिक साम्राज्यवाद

समाधान के रूप में 'गीता' क्या देती है ?

एकता, भ्रातृत्व का बल, समृद्धि का स्रोत, संगठन, परमात्मा की प्रथम वाणी, सर्वमान्य शास्त्र, धर्म की व्याख्या, धर्माचरण की समग्र विधि, तत्त्वदर्शी सन्त की पहचान, मजहबी झगड़ों से मुक्ति, प्रेय और परमश्रेय।

वर्ण व्यवस्था (जातिवाद)

'गीता' के अनुसार आज की जातियां भगवान् ने नहीं बनाई। वर्ण भगवत्पथ के क्रमोन्नत सौपान हैं।

सम्प्रदायवाद और विरोधी पूजा-पद्धतियां

'गीता' के अनुसार ईश्वर-प्राप्ति की विधि एक है- नियत कर्म का आचरण। बहुत-सी विधियां मूढ़बुद्धि अविवेकियों की देन है।

बहुदेववाद

अन्य देवता उन अविवेकियों के मन की उपज है, जो कामनाओं से आक्रान्त और विवश हैं।

स्त्रियों के अधिकार

'गीता' स्त्री-पुरुष दोनों को समान मानती है। दोनों ही क्षर अथवा अक्षर पुरुष हैं। दोनों में से कोई भी पुरुषोत्तम हो सकता है।

हिन्दुओं में बिखराव-बौद्ध, जैन, सिख, वैष्णव, शाक्त इत्यादि

आपसी फूट धर्मशास्त्र को न समझने से आई है। शास्त्र मिलते ही वे एक घटक में समा जाएंगे।

धर्मान्तरण

'गीता' के अनुसार, मानव मात्र का धर्म एक है- एक परमात्मा के प्रति श्रद्धा, उसकी प्राप्ति की नियत विधि का आचरण, साक्षात्कार, दर्शन और स्थिति- तो अन्तरण कैसा? अन्तरण होता है रुढ़ियों का, विचारों का, रहन-सहन का- धर्म का नहीं।

भ्रष्टाचार, ऊंच-नीच, सामाजिक असमानता, राजनीति में अपराधियों का प्रवेश

जब तक कुरीतियां रहेंगी, जनता को गुमराह करके लाभ उठाने वाले रहेंगे। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

त्रिविध कार्यक्रम कर अपनाई सनातन संस्कृति

गुजरात के भावनगर जिले की सिहोर तहसील के वलवाड़ गांव में क्षात्र संस्कृति रक्षा समिति के तत्वावधान में 27 अक्टूबर को शस्त्र पूजन, यज्ञ एवं महाआरती का आयोजन किया गया जिसमें गांव के 30 मोलेसलम परिवारों ने पुनः सनातन संस्कृति अपनाई। उल्लेखनीय है कि गुजरात में धर्मांतरण कर मुस्लिम बने क्षत्रिय परिवारों को मोलेसलाम कहा जाता है और इन परिवारों को धर्म जागरण मंच व क्षात्र संस्कृति रक्षा समिति श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवकों के सहयोग से पुनः सनातन संस्कृति में लौटा रही है। इसी उपलक्ष में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

संघ साहित्य के ऐतिहासिक संदर्भ

(पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा रचित 'बदलते दृश्य' पुस्तक के सत्रहवें प्रकरण 'बदलते दृश्य' में से शेखावाटी क्षेत्र के महापुरुषों के उल्लेख में से 'राजा रायसल दरबारी' के बारे में।

भाग्य पर पुरुषार्थ का महत्व सिद्ध करने वाले राजा रायसल जी का जन्म वि.सं. 1595 में हुआ था। उनके पिता अमरसर के शासक राव सूजा थे। उनकी माता जोधपुर की शासक राव सूजा जी की पौत्री व बाघा जी की पुत्री रत्नकंवर थी। दिल्ली शासक शेरशाह सूरी ने सूजा जी से उनका नांण अमरसर का राज्य छीनकर रासा टांक को दे दिया। किशोरावस्था में आने पर रायसल जी ने अपने बड़े भाई लूणकरण जी के साथ रासा टाक पर आक्रमण किया। युद्ध क्षेत्र में रासा टाक रायसल जी के हाथों मारा गया और नांण अमरसर पर पुनः सूजा जी का आधिपत्य हो गया। राव सूजा जी की मृत्योपरान्त लूणकरण जी ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण अमरसर के शासक बने जबकि रायसल जी को लामिया सहित 12 गांवों की जागीर मिली। जनश्रुति के अनुसार एक बार राव लूणकरण जी ने अपने दीवान देवीदास (जो सूजा जी के शासन काल से राज्य के दीवान थे) से पूछा कि 'नीति बड़ी या धन?' कही उल्लेख मिलता है कि रिजक बड़ा या नर? विद्वान देवीदास जी ने उत्तर दिया कि रिजक या धन का क्या बड़ा होना, बड़ा तो पुरुषार्थ है। यदि व्यक्ति पुरुषार्थी है तो वह नवीन राज्य का निर्माण कर देता है वरन् पुरुषार्थ के अभाव में पैतृक राज्य को भी खो देता है। यह उत्तर सुनकर लूणकरण जी ने नाराज होकर दीवान देवीदास जी को राज्य से निष्कासित करते हुए कहा कि उनका छोटा भाई रायसल वीर भी है, पुरुषार्थी भी, उसे नवीन राज्य का शासक बनाने में सहायता कर अपने कथन की सार्थकता सिद्ध करो। देवीदास जी अमरसर छोड़कर लामिया रायसल जी के पास चले गए।

दीवान देवीदास ने रायसल जी को अकबर के पास जाकर अपना भाग्य आजमाने की सलाह दी। रायसल जी रैवासा के चन्देल रासोजी से 20 घोड़े उधार लेकर शाही सेवा में आगरा पहुंचे। उस समय अकबर सेना लेकर उजबेक बन्धुओं अली कुली खां और बहादुर खां पर आक्रमण के लिए जा रहा था। रायसल जी अपने 20 घुड़सवरों के साथ शाही सेना में सम्मिलित हो गए। खैराबाद के इस युद्ध में शत्रु पक्ष के भीषण आक्रमण से शाही हरावल छिन्न-भिन्न हो गया। शत्रु पक्ष का सेनापति अपनी सेना के साथ शाही हरावल की पंक्तियों को चीरते हुए अकबर की ओर बढ़ा। उसी समय रायसल जी अपने स्थान से आगे बढ़कर शत्रु सेनापति पर टूट पड़े और उसे ललकारते हुए कहा-

'खड़ा खड़ा रह - देख राजपूत के हाथ।'

अपने पराक्रम से उन्होंने शत्रु सेनापति का सिर काट डाला परिणामतः शाही सेना की विजय हुई। युद्ध में प्रदर्शित उनके शौर्य और उनके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अकबर ने उन्हें अपने दरबार में सम्मानित स्थान दिया और उन्हें राजा की उपाधि दी। राजा रायसल जी ने लामिया वापिस आकर रैवासा और कासली के चंदेलों पर आक्रमण किया और उन्हें पराजित कर रैवासा और कासली पर अधिकार स्थापित किया। अपनी शक्ति में वृद्धि कर पहले इन्होंने निर्वाणों पर आक्रमण कर खण्डेला उनसे छीना फिर उदयपुर के निर्वाणों को परास्त कर उस पर भी अपना आधिपत्य स्थापित किया। इस प्रकार अपनी वीरता व पुरुषार्थ तथा दीवान देवीलाल की प्रेरणा से उन्होंने भाई बंट में प्राप्त लामिया की छोटी सी जागीर को एक विस्तृत एवं समृद्ध राज्य में बदल दिया। उन्होंने खण्डेला को अपने राज्य की राजधानी बनाया। राजा रायसल दरबारी ने अपने जीवन काल में कुल 52 युद्धों में भाग लिया और उन सभी में विजयी प्राप्त की।

राजा रायसल वीर तो थे ही साथ ही धर्मज्ञ व दातार भी थे। इन्होंने वृन्दावन में गोपीनाथ जी के मंदिर का निर्माण करवाया। उन्होंने लोहार्गल जी में भी गोपीनाथ जी के मंदिर का निर्माण करवाया। वे शाही सेवा में जहां भी रहे मुक्त हस्त से दान करते रहे। ब्राह्मणों, मंदिरों, विद्वानों को भूमि दान करते रहे। कहा जाता है कि उनके द्वारा दिए भूमि दान के पट्टे का बादशाह द्वारा भी लोप नहीं किया जा सकता था।

रायसल न रिक्खयो दत बिण खाली दीठ।
पटा ज़िका री पात साह, लोप न सकिया लीठ।।

राजा रायसल जी की मृत्यु दक्षिण भारत में संभवतः बुरहानपुर में वि.सं. 1678 ई. में हुई।

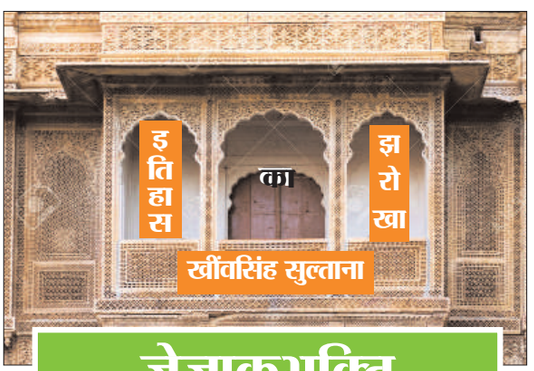

जेजाकभुक्ति (बुन्देलखण्ड) के चन्देल

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में चन्देलों का महत्वपूर्ण स्थान है, जिन्होंने उत्तर भारत की राजनीति को एक लम्बे समय तक प्रभावित किया। चन्देल वंश के इतिहास के सर्वाधिक प्रामाणिक साधन चन्देल शासकों द्वारा उत्कीर्ण करवाए गए अभिलेख हैं जिनमें छतरपुर का लेख, खजुराहों का लेख, मऊ प्रस्तर का अभिलेख प्रमुख है। इनमें चन्देल शासकों की उपलब्धियों व वंशावली का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। इसके अतिरिक्त अनेक साहित्यक ग्रन्थों प्रबोध चन्द्रोदय, प्रबन्ध केश, परमाल रासो, आल्हा खण्ड से भी चन्देलों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। अभिलेखों और ग्रन्थों के अनुसार चन्देल चन्द्रवंशी क्षत्रिय थे। चन्देल वंश की स्थापना नन्नुक ने 831 ई. में की थी। चन्देल वंश के प्रारंभिक शासकों में वाक्पति, जयशक्ति, विजय शक्ति और राहिल प्रमुख थे। जयशक्ति के कारण ही इस क्षेत्र को जेजाक भुक्ति कहा जाने लगा। प्रारंभिक चन्देल शासक प्रतिहारों के अधीनस्थ शासक के रूप में शासन करते थे उनके प्रमुख नगर महोबा, छतरपुर, कालिजंर और खजुराहो थे। राहिता का पुत्र हर्ष (900-925 ई.) एक शक्तिशाली शासक था जिसने अपने पराक्रम से प्रतिहारों की अधीनता से चन्देल राज्य को एक स्वतंत्रत राज्य बनाया। उसने अनेक राज्यों को जीत कर उन्हें अपना करद राज्य बनाया। उसने प्रतिहार शासक महिपाल का राष्ट्रकूटों के विरुद्ध सहयोग कर पुनः कन्नौज के सिंहासन पर बैठाया। हर्ष ने चौहानों व कलचुरियों के साथ वैवाहिक संबंधों द्वारा अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली। हर्ष के बाद उसका पुत्र यशोवर्मन 930 ई. में शासक बना। वह एक महत्वकांक्षी और पराक्रमी शासक था। राज्य विस्तार की भावना के साथ सर्वप्रथम उसने कन्नौज पर आक्रमण किया और प्रतिहारों को परास्त किया। इसके उपरान्त उसने राष्ट्रकूटों से कालिंजर का प्रसिद्ध दुर्ग विजय किया। खजुराहो अभिलेख में उसकी विजयों का आलंकारिक वर्णन किया गया है जिसके अनुसार गौड़, कौसल, कश्मीर, मालव, चेदि, कुरु आदि का विजेता बताया गया है। इसी लेख में उसे विशाल सेना के साथ हिमाचल के राज्यों पर विजय का भी वर्णन मिलता है। इस अभिलेख से पता चलता है कि यशोवर्मन का प्रभाव हिमालय से मालवा तथा कश्मीर से बंगाल तक फैला हुआ था। यद्यपि यह विवरण अतिरंजित हो सकता है परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं की यशोवर्मन एक विजेता और पराक्रमी शासक था जो एक साधारण शासक की स्थिति से ऊपर उठकर एक विशाल साम्राज्य का निर्माता बना। एक विजेता होने के साथ-साथ वह एक महान निर्माता भी था। उसके शाससकाल से ही चन्देलों की प्रसिद्ध वास्तुकला की शुरुआत मानी जा सकती है उसके शासन काल में ही खजुराहो के प्रसिद्ध विष्णु मंदिर का निर्माण हुआ। **(क्रमशः)**

छात्रवृत्ति

जिओ छात्रवृत्ति

जिओ छात्रवृत्ति 2020 उन विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता मुहैया करवाती है जो उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं लेकिन आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण नहीं कर पा रहे हैं।

रिलायंस ग्रुप द्वारा इस छात्रवृत्ति योजना में सालाना 35000 से 55000 तक की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। यह छात्रवृत्ति 10वीं से स्नातकोत्तर तक के लिए दी जाती है। मेरिट लिस्ट के आधार पर इस छात्रवृत्ति योजना के लिए चयन होता है। इस छात्रवृत्ति में किसी प्रकार (sc, st, obc etc.) का आरक्षण नही हैं।

जिओ छात्रवृत्ति के लिए योग्यताएं :

राष्ट्रीयता : भारतीय

शिक्षा : छात्र आवश्यक रूप से 10वीं, 11वीं, 12वीं, स्नातक या स्नातकोत्तर का छात्र हो। छात्र आवश्यक रूप से आर्थिक असक्षम हो।

छात्र जिस कक्षा में पढ़ रहा है उसकी अकादमिक परफॉर्मेंस निम्न प्रकार होनी चाहिए।

कक्षा 10वीं : 70% या उससे अधिक, अधिकृत राज्य बोर्ड से (85% या उससे अधिक ICSE या CBSC छात्रों के लिए)

कक्षा 11वीं : 70% या उससे अधिक, अधिकृत बोर्ड से(85% या अधिक CBSC या ISCE छात्रों के लिए)

कक्षा 12वीं : 65% या उससे अधिक, अधिकृत राज्य बोर्ड से (80% या अधिक CBSC या ICSE छात्रों के लिए)

स्नातक : 75% या उससे अधिक यूनिवर्सिटी की परीक्षा में अधिकृत कॉलेज या संस्था से ।

स्नातक के बाद : 75% या उससे अधिक डिग्री परीक्षा में अधिकृत कॉलेज या संस्था से ।

जिओ छात्रवृत्ति 2020 के लिए Reliance Jio Infocomm Limited की आधिकारिक वेबसाइट से आवेदन किया जा सकता है। छात्रवृत्ति के बारे में अधिक जानकारी के लिए उम्मीदवार हेल्पलाइन नंबर 18008909999 का उपयोग कर सकते हैं। निम्नलिखित दस्तावेज हैं जो आपको रिलायंस जियो छात्रवृत्ति 2020 के आवेदन करने के लिए आवश्यक होंगे।

शिक्षा योग्यता प्रमाण पत्र, आर्थिक कमजोर वर्ग प्रमाण पत्र, स्कूल पहचान पत्र, बैंक पासबुक, फोटो, मोबाइल नंबर, आधार कार्ड।

- रणजीतसिंह आलासन

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री क्षत्रिय युवक संघ के
स्वयंसेवक एवं हमारे सहयोगी

श्री भवानीसिंह मुंगेरिया

के पुलिस निरीक्षक से
पुलिस उपाधीक्षक
के रूप में पदोन्नत होने पर
हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल
भविष्य की शुभकामनाएं।

शुभेच्छु :

तारेंद्रसिंह झिनझिनयाली	खंगारसिंह झलोड़ा	घनश्याम सिंह बैरसियाला
उगम सिंह साजितड़ा	रतनसिंह बैरसियाला	अमानसिंह पारेवर
सवाईसिंह पारेवर	सांवलसिंह मोढा	सुरेन्द्रसिंह पोछीना (1)
चतुर्भुजसिंह तेजमालता	स्वरूप सिंह कुंडा	गणपत सिंह अवाय
सवाई सिंह देवड़ा	भोजराज सिंह तेजमालता	दातार सिंह देवड़ा
उम्मेद सिंह बडोड़ागांव	नरपत सिंह राजगढ़	अमर सिंह रामदेवरा

कंवराज सिंह, सेतरावा

मुल्तान सिंह, जोगीदास का गांव

संपादकीय

क्रांति का क्रम

विश्व का इतिहास क्रांतियों के विवरण से भरा पड़ा है। पूज्य तनसिंह जी ने अपने एक सहगीत में 'क्रांति का बजरा' शब्द का इस्तेमाल किया है। बजरे का अर्थ जहाजों का समूह होता है। अर्थात् उन्होंने क्रांतियों के समूह की चर्चा की है। युग प्रवाह के हर खंड में अनेक क्रांतियां हुई हैं और इनमें से अधिकांश का लक्ष्य राजनीतिक परिवर्तन होता है। विगत कुछ सौ वर्षों के इतिहास को देखें तब तो सत्ता परिवर्तन को ही क्रांति माना गया है और इसी के परिणाम स्वरूप अनेक रक्त रंजित क्रांतियां भी घटित हुई हैं। लेकिन विगत कुछ सौ वर्षों में क्रांतियों की आवृत्ति जितनी अधिक है उनकी आयु की न्यूनता भी उतनी ही अधिक है। क्रांति की आवृत्ति और क्रांति की आयु दोनों में सकारात्मक संबंध है। कम वय की क्रांति अन्य नई क्रांति को आमंत्रित करती है और इस प्रकार क्रांतियों का समूह बढ़ता जाता है। लेकिन प्रश्न यह है कि क्रांति की आयु इतनी छोटी क्यों होती है, आखिर कमी क्या रह जाती है? यही हमारे इस अंक के विषय है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ के पूर्व संघ प्रमुख पूज्य आयुवानसिंह जी हुडील ने अपनी पुस्तक 'राजपूत और भविष्य' की भूमिका में लिखा है कि '**राजनीतिक ध्येय की प्राप्ति के लिए राजनीतिक क्रांति आवश्यक है, राजनीतिक क्रांति तक पहुंचना और समाज को उसके लिए तैयार करना सरल कार्य नहीं है। राजनीतिक क्रांति से पूर्व सामाजिक क्रांति आवश्यक है और सामाजिक क्रांति के भी पूर्व विचार क्रांति (Philosophical Revolution) आवश्यक है, अर्थात विचार क्रांति राजनीतिक क्रांति का प्रथम सोपान है। जो व्यक्ति इन दोनों अवस्थाओं को पार किए बिना ही राजनीतिक क्रांति का प्रयास करते हैं, उनकी असफलता निश्चित समझनी चाहिए।**' इस विवेचन से स्पष्ट है कि अधिकांश क्रांतियां असफल क्यों हो जाती हैं? क्रांतियों का क्रम क्या है? उस क्रम का प्रथम और अंतिम सोपान क्या है?

क्रांति का प्रारम्भ विचार क्रांति से होता है और विचार क्रांति का अर्थ है दृष्टिकोण में परिवर्तन। लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिए उनके विचार प्रवाह को मोड़ना पड़ता है। वस्तु, व्यक्ति एवं घटना को आंकने के मापदंडों को परिष्कृत करना पड़ता है। इस परिष्करण के द्वारा उनके विचारों को अपेक्षित मोड़ देकर उन्हें अपने ध्येय को केन्द्रीय स्थान देने के लिए तैयार करना ही विचार क्रांति कही जा सकती है। ऐसी विचार क्रांति होने पर व्यक्ति के विचारों का प्रेरक तत्व केवल उसका ध्येय हो जाता है और उसकी समस्त वैचारिक गतिविधियां उसके ध्येय बिन्दु के चारों ओर प्ररिक्रमण करती है। विचारों और दृष्टिकोण में इस प्रकार का परिवर्तन होने पर ही सामाजिक क्रांति की ओर बढ़ा जा सकता है। सामाजिक क्रांति का तात्पर्य ध्येय के अनुकूल सामाजिक ढांचे में अपेक्षित परिवर्तन लाना होता है। पुराने सामाजिक संस्कारों के मूल में विद्यमान भावना के अनुरूप ही उनमें अपेक्षित परिवर्तन कर नए सामाजिक संस्कारों का निर्माण करना सामाजिक क्रांति कहा जा सकता है। सम्पूर्ण समाज की समस्त गतिविधियों का केन्द्रीय बिन्दु सामाजिक ध्येय को बना देना सामाजिक क्रांति कहलाता है। समाज को एक श्रेष्ठ नेतृत्व के पीछे सन्नद्ध कर अपने सामाजिक ध्येय की प्राप्ति करने के लिए सामाजिक ढांचे में तद्नुकूल परिवर्तन ला देना भी सामाजिक क्रांति कहलाता है। क्यों कि इससे पूर्व के सोपान विचार क्रांति के द्वारा पहले ही सामाजिक ध्येय को केन्द्र बिन्दु बना दिया जाता है इसीलिए यह पहले की अपेक्षा आसान होता है। ऐसी वैचारिक एवं सामाजिक क्रांति के बाद ही ऐसी राजनीतिक क्रांति लाई जा सकती है जो दीर्घजीवी हो। ऐसी राजनीतिक क्रांति का लक्ष्य भी वही सामाजिक ध्येय होता है जो इससे पूर्व घटित हुई विचार क्रांति एवं सामाजिक क्रांति की प्रेरक शक्ति होता है, केन्द्र बिन्दु होता है। सप्तऋषि मंडल के ध्रुव तारे की तरह स्वयं अटल रहकर मंडल के शेष सभी नक्षत्रों को अपने चारों ओर परिक्रमण करवाता हुआ बांधे रखता है। यहां पर भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि ऐसी राजनीतिक क्रांति भी साध्य नहीं साधन ही है। साध्य तो वही सामाजिक ध्येय बना रहता है जिसके लिए विचार क्रांति, सामाजिक क्रांति और फिर राजनीतिक क्रांति अमल में लाई जाती है। इस प्रकार सभी क्रांतियां साधन ही होती हैं। साध्य तो वही सामाजिक ध्येय होता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ क्रांति के इसी क्रम का अनुसरण करता है। संघ का प्रारंभिक प्रयास विचार क्रांति ही है, दृष्टिकोण में परिवर्तन ही है। इसके लिए संघ बहुत अधिक जोर देता है एवं धैर्यपूर्वक एक लंबे अभ्यास के द्वारा इसे हासिल करने को प्रथम आवश्यकता समझता है। संघ '**समानोमंत्र समिति समानी**' को प्रथम आवश्यकता समझता है। इस आवश्यकता की ओर बढ़ते-बढ़ते ही सामाजिक क्रांति की ओर अग्रसर हो रहा है। राजनीतिक क्रांति के लिए संघ अभी उतावला नहीं है लेकिन संघ उसे भी अपने सामाजिक ध्येय के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण सोपान समझता है लेकिन उसके लिए पहले प्रथम और द्वितीय सोपान पर निर्णायक बढ़त को आवश्यक मानता है। इसीलिए आम की गुठली बो कर उसके दस दिन बाद ही रसीले रसराज खाने की चाह संघ मार्ग पर आगे बढ़ने में सदैव बाधा बनी रहती है और इस बाधा को पार न कर पाने वाले पथिक संघ मार्ग पर अनवरत गतिमान नहीं रह पाते। इसीलिए यदि हमें स्थायी क्रांति चाहिए या दीर्घ जीवी क्रांति चाहिए तो क्रमबद्ध क्रांति के उचित क्रम को अपनाना पड़ेगा और श्री क्षत्रिय युवक संघ हमारी ऐसी चाह के लिए सदैव स्वागतोत्सुक है।

खरी-खरी

'भ्रामक प्रतिबद्धताओं के मारे : बुद्धिवादी हमारे'

हमारे देश में आजकल दो प्रकार की विचारधाराएं विशेष रूप से प्रचलन में हैं। 2014 में राष्ट्रीय राजनीति के शिखर पर भारतीय जनता पार्टी के प्रभावी उद्भव के बाद देश की सभी वैचारिक धाराएं मुख्य रूप से दो ध्रुवों में विभक्त हो गई हैं। एक ध्रुव दक्षिण पंथी कहलाता है जो अपने आपको राष्ट्रवादी भी कहता है और भारत की मूल संस्कृति के प्रति भारतीयों के भावनात्मक लगाव को आधार बनाकर अपनी राजनीति का महल खड़ा कर रहा है। दूसरा ध्रुव तथाकथित वामपंथियों एवं उदारवादियों का है जो आजादी के बाद से ही सत्ता के बल पर भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों का धर्म, जाति, वर्ग के आधार पर तुष्टिकरण कर पुनः सत्ता पर काबिज होता रहा है। ये लोग यूं तो अपने आपको उदारवादी कहते हैं लेकिन विगत 70 वर्षों से इन्होंने जिस निर्दयता से अपनी सत्ता के लिए संभावित खतरों को केवल आशंका के आधार पर समाप्त करने का प्रयास किया है वह दुर्बलतम कट्टरता का उदाहरण है। इन दोनों ही विचारधाराओं का लक्ष्य अपनी विचारधारा को पुष्ट करना नहीं बल्कि विचारधारा के नाम पर लोगों का भावनात्मक ध्रुवीकरण कर सत्ता पाना है इसीलिए हम प्रायः इन विचारधाराओं का स्वयं को प्रतिनिधि कहने वाले नेताओं के कृतत्व में इन विचारधाराओं से विचलन देखते रहते हैं। हम तथाकथित सेकुलर एवं उदारवादियों को फ्रांस के धर्मांध आतंकियों के प्रति सहानुभूति दर्शाते देख सकते हैं तो हम तथाकथित दक्षिण पंथियों को करोड़ों लोगों के लिए पूज्य महापुरुष के बेहुदा कार्टून बनाने वाले सेकुलर्स के प्रति सहानुभूति जताते भी देख सकते हैं। हम एक पार्टी के पूर्व अध्यक्ष को उत्तरप्रदेश में हुए अपराध को जाति के कोण से प्रचारित करते भी देखते हैं तो उसी पार्टी के एक मुख्यमंत्री को उनके राज्य में एक व्यक्ति को जिंदा जलाने को जाति के एंगल से देखने का आरोप लगाकर विपक्षी पार्टी की आलोचना करते भी देख सकते हैं। इस प्रकार विचारधाराओं के ये झंडाबरदार अपने स्वार्थ के लिए वैचारिक प्रतिबद्धताओं को कचरे के डिब्बे में डालते तनिक भी नहीं हिचकते। वास्तव में तो इनकी विचारधाराएं एक अपूर्ण संयोजन मात्र है जो केवल और केवल स्वार्थ पूर्ति का साधन है। ऐसे में हमारे समाज के स्वयं को बुद्धिवादी समझने वाले लोग किन प्रतिबद्धताओं में फंसे पड़े हैं, समझ से बाहर है। ईश्वर ने हमें महान क्षात्र परम्परा में जन्म दिया और उसके साथ-साथ एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन दिया जिसमें वर्तमान में प्रचलित सभी प्रकार की विचराधाराओं की श्रेष्ठताओं का समावेश है तो नेष्ठताओं का निवारण भी है। हजारों वर्षों से निरन्तर विकास को प्राप्त होकर बनी क्षात्र परम्परा एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन है जिसमें सूई की नोक रखने जितना भी छिद्र नहीं ढूंढा जा सकता, ऐसे में ऐसी अमृतमयी परम्परा को छोड़कर तथाकथित वामपंथ या दक्षिण पंथ, तथाकथित उदारवाद या उग्रवाद, तथाकथित पंथ निरपेक्षता या पंथ सापेक्षता या तथाकथित राष्ट्रवाद के चक्कर में पड़कर हमारे बुद्धिवादी लोग क्यों पूर्णता से अपूर्णता की ओर प्रवाहित हैं, यह समझ से परे है। आज हमारे में जो भी थोड़ा बहुत पढ़ लिख लेता है, चार किताबें ज्यादा पढ़ लेता है वह या तो अपने आपको उदारवाद या सेकुलरवाद का सबसे बड़ा पैरोकार सिद्ध करने को उतारू हो जाता है या राष्ट्रवाद का झंडा लेकर उसे सबसे ऊंचा फहराने में अपना जीवन लगाए जा रहा है। सोशल मीडिया के जमाने में कम पढ़े लिखे भावुक लोगों के लिए तो सोशल मीडिया ही विश्वविद्यालय बन गया है और वे अपना कीमती समय और ऊर्जा उन मुद्दों में जाया करते देखे जा सकते हैं जिनका लाभ उनको तो कुछ नहीं होने वाला बल्कि सत्ता के लिए संघर्ष रत धूर्त राजनीतिज्ञों का उल्लू सदैव सिद्ध करने के साधन जरूर बने रहते हैं। लेकिन हमारा इस लेख का विषय तो वे तथाकथित पढ़े लिखे लोग हैं जो अपनी हीन भावना से इतने अधिक ग्रसित हैं कि वे अपने आपको भगवान राम अथवा कृष्ण की परम्परा का संवाहक कहने की अपेक्षा किसी वामपंथी, उदारवादी, उग्रवादी या राष्ट्रवादी का अनुयायी कहने में गौरव महसूस करते हैं। वे रत्नगर्भा राजपूत जाति की कोख से उत्पन्न हुए अनमोल रत्नों की अपेक्षा किसी विदेशी या भारतीय की खाल में घुसे विदेशी में अपना आदर्श ढूंढते हैं। ऐसे लोगों के नायक राम, कृष्ण, दुर्गादास, प्रताप, युधिष्ठर, अर्जुन, कुंवरसिंह, पाबूजी, शेखाजी आदि क्षात्र परम्परा के अनगिनत रत्नों की अपेक्षा या तो कोई यूरोपीय अथवा अमेरिकी होता है या फिर भारत में विगत 100 वर्षों में जन्में तथाकथित राजनेता होते हैं जिनके विचारों की जड़ों में किसी न किसी रूप में कोई पश्चिम का विचार मौजूद है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

कर्नाटक के हासन में दशहरा उत्सव

कर्नाटक के हासन जिले में राजपूत संस्कार समिति द्वारा दशहरा उत्सव का आयोजन किया गया। भारत के दक्षिणी छोर की तरफ स्थित इस क्षेत्र में विगत वर्षों में संघ के शिविर लगने प्रारम्भ हुए हैं। कुछ स्थानीय राजपूत बंधु भी इस दौरान सम्पर्क में आए हैं और वे संघ के दर्शन से प्रभावित होकर कर्नाटक के मूल निवासी राजपूतों को भी संघ से परिचित करवाने के प्रयासरत हैं। श्री बालाजी सिंह एवं बहिन वेदवती जी इसमें विशेष रूप से सक्रिय हैं और उन्हीं ने सहयोगी जुटाकर राजपूत संस्कार समिति का गठन किया है एवं एक राजपूत सभा भवन बनाने की प्रक्रिया भी प्रारम्भ हुई है। कर्नाटक में रह रहे प्रवासी राजस्थानी राजपूतों का भी इसमें पर्याप्त सहयोग मिल रहा है। इसी राजपूत संस्कार समिति द्वारा हर्षोल्लास से दशहरा उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में सांघिक गतिविधियों एवं दर्शन की जानकारी दी गई। विगत वर्षों में यहां हुए शिविरों बाबत् चर्चा की गई एवं आगामी समय में संघ दर्शन के प्रसार हेतु कार्यक्रमों की योजना बनाई गई। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में प्रवासी राजस्थानी समाज बंधु भी परिवार सहित उपस्थित रहे।

माधोबाबा ट्रस्ट द्वारा शेखाजी जयंती व प्रतिभा सम्मान समारोह

उत्तरप्रदेश के बिजनोर जिले के तेलीपुरा गांव में माधोबाबा ट्रस्ट द्वारा महाराव शेखाजी की 588वीं जयंती एवं प्रतिभा सम्मान समारोह 26 अक्टूबर को आयोजित किया गया। उल्लेखनीय है कि शेखाजी की 14वीं पीढ़ी में हुए मुकुटसिंह शेखावत के ज्येष्ठ पुत्र माधवसिंह शेखावत ने 1542 में तेलीपुरा रवाना की चौरासी बसाई थी। इस अवसर पर वक्ताओं ने महाराज मुकुटसिंह एवं माधवसिंह के इतिहास के बारे में जानकारी दी। इतिहास प्रसिद्ध मघी युद्ध का इतिहास बताया गया एवं महाराव शेखाजी व माधवसिंह जी से संबंधित शोध परक पत्रक वितरित किए गए। इस अवसर पर सेना, पुलिस, मेडिकल, शिक्षा व अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नरेन्द्रसिंह, क्षत्रिय युवा संघ संस्थान के प्रभारी वीरसिंह बैस, प्रशासनिक अधिकारी प्रिया रघुवंशी आदि ने अपने वक्तव्य में इतिहास व वर्तमान के विषय में अपनी बात कही। इसी प्रकार मोरना स्थित महाराजा मुकुटसिंह शेखावत पब्लिक स्कूल में भी महाराव शेखाजी की जयंती मनाई गई। श्रद्धेय आयुवानसिंह जी द्वारा रचित 'ममता और कर्तव्य' की कहानी 'मर्यादा रक्षा' का वाचन किया गया एवं महाराव शेखाजी के इतिहास की जानकारी दी गई।

क्षत्रिय महासभा बांसवाड़ा की बैठक संपन्न

क्षत्रिय महासभा बांसवाड़ा की चौखला ओड़वाड़ा स्तरीय बैठक महासभा के अध्यक्ष राजेन्द्रसिंह आनंदपुरी की अध्यक्षता में संपन्न हुई जिसमें वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की मूर्ति अनावरण एवं डांगपाड़ा क्षेत्र में बालकों की शिक्षा एवं संस्कार हेतु पूज्य तनसिंह जी उत्कृष्टता अकादमिक छात्रावास के निर्माण संबंधी चर्चा की गई। अध्यक्ष राजेन्द्रसिंह आनंदपुरी ने इस प्रकार के शैक्षणिक संस्थान की आवश्यकता एवं महत्त्व बताया। चौखला अध्यक्ष गजराजसिंह कलिंजरा ने यथासंभव सहयोग करने का आह्वान किया। सचिव वीरभद्र सिंह ने महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व के अनुकरण की आवश्यकता जताई। बैठक का संचालन कमलसिंह नौगामा ने किया।

बिहार ने चुने 28 राजपूत विधायक

बिहार विधानसभा के चुनावों में हमारे सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार 28 राजपूत विधायक चुने गये हैं जिनकी सूची यहाँ प्रस्तुत है। प्राप्त जानकारी के अनुसार इस बार विगत विधानसभा की अपेक्षा 9 विधायक अधिक हैं। सूची की प्रमाणिकता के लिए दो तीन सूत्रों से पूछा गया है फिर भी कुछ कमी लगे तो व्यक्तिगत प्रयास करने चाहिए।

विधानसभा क्षेत्र	नाम	पार्टी
धमदाहा :	लेसी सिंह	(JDU)
मोहीउद्दीन नगर :	राजेश सिंह	(BJP)
गौराबोदाम :	सवर्ण सिंह	(VIP)
लौरिया :	विनय बिहारी	(BJP)
वाल्मीकी नगर :	धीरेन्द्र प्रताप सिंह	
	उर्फ रिंकू सिंह	(JDU)
सुगौली :	शशिभूषण सिंह	(RJD)
मधुबन :	राणा रणधीर	(BJP)
शिवहर :	चेतन आनंद	(RJD)
बरुराज :	अरुण कुमार सिंह	(BJP)
साहेबगंज :	डॉ राजू कुमार सिंह	(VIP)
पारु :	अशोक कुमार सिंह	(BJP)
लालगंज :	संजय कुमार सिंह	(BJP)
महनार :	वीणा सिंह	(RJD)
बनियापुर :	केदारनाथ सिंह	(RJD)
तरैया :	जनक सिंह	(BJP)
दरौंधा :	व्यास सिंह	(BJP)
जमुई :	श्रेयसी सिंह	(BJP)
चकाई :	सुमित सिंह	(निर्दलीय)
गोपालगंज :	सुभाष सिंह	(BJP)
छातापुर :	नीरज कुमार बबलू	(BJP)
बाढ़ :	ज्ञानेन्द्र सिंह ज्ञानू	(BJP)
बरहड़ा :	राघवेन्द्र प्रताप सिंह	(BJP)
आरा :	अमरेन्द्र प्रताप सिंह	(BJP)
औरंगाबाद :	आनंद शंकर सिंह	(कांग्रेस)
नवीनगर :	डब्ल्यू सिंह	(RJD)
रामगढ :	सुधाकर सिंह	(RJD)
वजीरगंज :	वीरेन्द्र सिंह	(BJP)
बरौली :	रामप्रवेश राय	(BJP)

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

(पृष्ठ एक का शेष) श्रेष्ठ कार्य...

कुचामन

बीकानेर

इसीलिए हमें संघ का स्वयंसेवक बनने का अवसर मिला है, यह हमारे पर भगवान की कृपा है। हम इस कृपा को समझें। जो इस कृपा को नहीं समझ पा रहे है वे अभागे है। ऐसे अभागे लोग हमारे किस काम के हैं। कोई व्यक्ति यदि संघ का स्वयंसेवक होकर यह जवाब देता है कि समय मिलेगा तो काम करुंगा। वह वास्तव में स्वयंसेवक ही नहीं है। वास्तविक स्वयंसेवक वही है जिसकी प्राथमिकता संघ है। जो यह कहता है कि समय मिलेगा तो देखूंगा, उसकी प्राथमिकताओं में संघ का स्थान बहुत नीचे होता है, ऐसे व्यक्ति को स्वयंसेवक भी नहीं माना जा सकता। इसीलिए हम हमारी प्राथमिकताओं का निर्धारण करते समय सदैव स्मरण रखे कि मुझे श्रेष्ठ व्यक्ति बनना है और परमेश्वर की कृपा से मुझे जो श्रेष्ठ बनने का अवसर मिला है, मुझे उसका पूर्ण लाभ उठाना है। इसके लिए मुझे सदैव संघ का स्मरण बना रहे। स्नेहमिलन के विषयों पर चर्चा करते हुए केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने कहा कि आगामी 22 दिसम्बर को संघ का हीरक जयंती वर्ष प्रारम्भ हो रहा है और 22 दिसम्बर 2021 को हीरक जयंती है। उसी प्रकार 25 जनवरी 2024 को पूज्य तनसिंह जी की 100 जयंती है। इसके लिए माननीय संघ प्रमुख श्री की चाह है कि प्रत्येक स्वयंसेवक इन चार वर्षों में प्रतिवर्ष संघ साहित्य की कोई एक पुस्तक निःशुल्क रूप से भेंट देवें। उन्होंने कहा कि संघ साहित्य हमारी प्रेरणा का अखंड स्रोत है, जिस स्रोत से हम लाभान्वित हो रहे हैं उसका लाभ हमारे सम्पर्क में आने वाले हर व्यक्ति को मिले इसका प्रयास करना चाहिए इसके लिए आगामी 4 वर्षों के लिए यह न्यूनतम कार्यक्रम है। संभागीय कार्यालय के भवन के रखरखाव को लेकर चर्चा की गई। श्री रणधा ने कहा कि संघ के केन्द्रीय नेतृत्व ने इतना बड़ा भवन हमें बनाकर दिया है, हमारा दायित्व है कि हम इसकी सार-संभाल रखें। सभी ने इसके लिए अपना अपना सहयोग बताया एवं कार्यालय भवन का रंगरोगन आदि करवाने का निर्णय लिया गया। वर्तमान में सभी स्वयंसेवकों से वैश्विक महामारी के दौर में जीवंत सम्पर्क बनाए रखने के लिए चलाए जा रहे सम्पर्क कार्यक्रम की जानकारी दी गई। प्रतिदिन एक घंटा संघ कार्य में देने के कार्यक्रम के बारे में संभाग प्रमुख चन्द्रवीरसिंह देणोक ने जानकारी दी एवं वर्तमान परिस्थितियों में क्या-क्या किया जा सकता है इसकी जानकारी दी। स्नेहमिलन में वयोवृद्ध स्वयंसेवक नारायणसिंह माणकलाव, शंकरसिंह महरोली, डूंगरसिंह किरड़ाली, किशनसिंह खिरजां सहित लगभग 50 स्वयंसेवक उपस्थित रहे। संघ प्रमुख श्री का यह प्रवास कार्यक्रम 5 नवम्बर को प्रारम्भ हुआ। 5 को संघ प्रमुख श्री जयपुर से कुचामन पधारे। कुचामन स्थित नागौर संभाग के कार्यालय 'आयुवान निकेतन' में स्थानीय स्वयंसेवक से मिलकर संघ कार्य की जानकारी ली। कार्यालय भवन में हुए नव निर्माण का निरीक्षण किया एवं आवश्यक निर्देश दिए। अपराह्न विश्राम के पश्चात स्वयंसेवकों से पुनः चर्चा की एवं संघ साहित्य अधिकतम लोगों तक पहुंचाने के लिए कार्य करने का आह्वान किया। शाम को संघ को वयोवृद्ध स्वयंसेवक छोटूसिंह जाखली से मिलने पधारे एवं उनके स्वास्थ्य की कुशल क्षेम पूछी। 6 नवम्बर को प्रातः कुचामन से रवाना होकर नागौर पधारे एवं नागौर में अपराह्न भोजन के साथ ही स्थानीय स्वयंसेवकों से संघ कार्य बाबत चर्चा की। तद्परांत बीकानेर के लिए प्रस्थान किया। 6 नवम्बर की शाम माननीय संघ प्रमुख श्री बीकानेर पधारे। बीकानेर के वयोवृद्ध स्वयंसेवक कानसिंह बोघेरा का विगत दिनों देहावसान हो गया था, उनके आवास पर जाकर परिजनों से मिलकर संवेदना व्यक्त की। तद्परांत संभागीय कार्यालय 'नारायण निकेतन' पधारे। 8 नवम्बर को प्रातः अल्पाहार तक यहीं विराजे एवं स्थानीय स्वयंसेवकों से सांघिक गतिविधियों बाबत् जानकारी ली। कार्यालय भवन के रखरखाव एवं व्यवस्था बाबत् चर्चाएं हुई। महामारी काल में विभिन्न सावधानियों के बीच संघ कार्य की प्रगति के बारे में जानकारी ली एवं आवश्यक निर्देश दिए। संभाग के वयोवृद्ध स्वयंसेवक भवानीसिंह सुंई व सुमेरसिंह गुड़ा के स्वास्थ्य के बारे में दूरभाष से जानकारी ली। युवा स्वयंसेवक तनवीरसिंह खारी के घर स्वयंसेवकों के स्नेह भोज में शामिल हुए। 8 नवम्बर को प्रातः सड़क मार्ग से जोधपुर के लिए रवाना हुए। मार्ग में श्रीबालाजी स्थित स्वामी अड़गड़ानंद जी के आश्रम में पधारे एवं वहां निवासरत स्वामी जी के शिष्य गुरुचरनानंद जी से आध्यात्मिक चर्चा की। नागौर में अपराह्न का भोजन कर विश्राम किया एवं शाम तक जोधपुर पहुंचे। इस प्रकार 5 नवम्बर से 10 नवम्बर तक के प्रवास के बाद 10 को अपराह्न बाड़मेर पधारे। इस प्रवास के दौरान नागौर, बीकानेर व जोधपुर संभाग के स्वयंसेवकों ने सानिध्य लाभ प्राप्त किया।

संत मिलन

निर्भया नशामुक्ति केन्द्र मेवाड़ का कार्यक्रम

उदयपुर के कुंभा सभागार में 7 नवम्बर को निर्भया नशामुक्ति केन्द्र मेवाड़ का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में गुजरात की किन्नारी बा ने अपने उद्बोधन में कार्यक्रम के विषय पर गंभीर उद्बोधन दिया। उल्लेखनीय है कि किन्नरी बा को उनके विवाह में पिता जयदेवसिंह ने 2200 पुस्तकें दहेज के रूप में दी। कार्यक्रम को स्वामी ज्ञानानंद, प्रो. शिवसिंह कच्छेर, महेन्द्रसिंह शेखावत, प्रदीपकुमार सिंह सिंगोली, डॉ. महेन्द्रसिंह आगरिया, बृजराजसिंह खारड़ा, डॉ. दरियावसिंह आदि ने संबोधित किया। संचालन अनिता राठौड़ ने किया। इस संगोष्ठी में नशा मुक्ति के संबंध में अनेक सुझाव आए। सभी श्रोताओं को दुर्गा सप्तशती भेंट की गई।

(पृष्ठ एक का शेष) मानव...

'गीता' प्रकाश में आते ही यह गुमराहियत सहज शान्त हो जाएगी। कोई किसी को भरमा नहीं सकेगा। मनुष्य मनुष्य को सगे भाई की तरह देखने लगेगा।

बेरोजगारी, रोटी, कपड़ा और मकान : 'गीता' में भगवान् कहते हैं कि मुझे नियत विधि से भजकर लोग स्वर्ग की कामना करते हैं, और मैं देता हूं।

आरक्षण : 'गीता' के अनुसार, **'ममैवांशो जीवलोके...'** अर्थात् मनुष्य भगवान् का विशुद्ध अंश है। जब उसमें जाति ही नहीं है तो आरक्षण कैसा? आरक्षण देना है तो आर्थिक आधार हो सकता है किन्तु अनुसूचित आदिवासी, अनुसूचित जनजाति जैसे शब्दों में चांटा मारकर आरक्षण देने का औचित्य नहीं है।

आतंकवाद, एक लम्बी परम्परा जो भारत में सन् 1100 ई. से चल रही है : जब तक मुसलमान, ईसाई या हिन्दू रहेंगे, यह चलेगा। पहले धर्मशास्त्रों की समीक्षा कर आतंकवाद के जड़ की पहचान करें कि इनमें कितना समाजशास्त्र है और कितना अध्यात्म? जो धर्मशास्त्र है उसे अपनाएं, आतंकवाद समाप्त हो जाएगा। सम्पत्ति के झगड़े हो सकते है किन्तु गिरोह बनाकर निरीह लोगों की नृशंस हत्या बन्द हो जाएगी।

राष्ट्रीय ग्रन्थ का अभाव : दुनियां में डेढ़ सौ से अधिक राष्ट्र हैं किन्तु ऐसा कोई देश नहीं है जिनके पास राष्ट्रीय ग्रन्थ न हो। विडम्बना ही है कि एक अरब से भी अधिक आबादी वाला विशाल भारत वर्ष ऐसा देश है जिसके पास राष्ट्रीय ग्रन्थ नहीं है। आजादी के पश्चात् 58 वर्षों में भी यह निर्णय नहीं हो पाया कि राष्ट्रीय ग्रन्थ कौन है? हीन भावना से नीची गर्दन करके जीने की अपेक्षा श्रेयतर है कि राष्ट्रीय ग्रन्थ का चयन करें। अतः जो किसी सम्प्रदाय-मजहब का प्रतिनिधित्व नहीं करती, धर्म निरपेक्ष, भेदभावमुक्त, शान्ति और समृद्धि का स्रोत, एकमात्र राष्ट्रीय ग्रन्थ श्रीकृष्णोक्त श्रीमद्भगवद्गीता है जिसका भाष्य 'यथार्थ गीता' है।

निष्कर्ष :

अस्तु श्रीमद्भगवद्गीता के यथावत् भाष्य 'यथार्थ गीता' को राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित कर मानव मात्र को शांति प्रदान करें।

।।ॐ।।

दिवलां वाळी दीवाळी

दोहा

सुत पारवतां समरतां, सुरसत मात सहाय।
उकत उपावो आवड़ा, वरणूं छंद वणाय।।1।।

सगळां परबां सांवठो, दीवाळी शुभ दिन्न।
मौज मनावै मानवी, व्यारूंमेर चमन्न।।२।।

धन तेरस री धावना, महेलियां रे मन्न।
मुंगी वुसतां मोलवै, धापै खरचे धन्न।।३।।

रूप चऊदस रमणियां ,सज सोळै सिणगार।
गजबण सुंदर गोरियां, इंद्र परि उणियार।।4।।

छंद - त्रिभंगी

रघुपति रचनायी, लंका ढायी, सीता पायी, शुभदायी।
दशकंध दळायी, लिछमण भाई,अवधपुरायी, ओमायी।
हर जन हरखायी, दीप जळाई, हिवड़े छाई, हरियाळी।
आणद उपजाळी, रुत रूपाळी, दिवलां वाळी, दीवाळी।
जिय दीवां वाळी, दीवाळी।।1।।

करसां रुत काती, मन मदमाती, धान धपाती, धनदाती।
हिवड़ो हरखाती, थाट थपाती, मौज मनाती, मुस्काती।
आवै इठलाती, छंम छमाती, प्रेम बढाती, प्रीताळी।
आणद उपजाळी, रुत रूपाळी, दिवलां वाळी, दीवाळी।
जिय दीवां वाळी, दीवाळी।।२।।

अमावस काळी, करै उजाळी, रंग रंगाळी, रणकाळी।
हर घर खुशहाली, सरब सुखाळी,राम रुखाळी,रमझाळी।
चौदिश चमकाळी, धान धपाळी, ताव तपाली, तटकाळी।
आणद उपजाळी, रुत रूपाळी, दिवलां वाळी, दीवाळी।
जिय दीवां वाळी, दीवाळी।।३।।

फौड़ेज फटाका, बम्म बमाका, धूम धड़ाका, धम्माका।
राकेट रड़ाका, सोर सड़ाका,भड़ं भड़ाका, भम्माका।
तारा तमाका, रेल रमाका, फुलझड़ फाका, फरकाळी।
आणद उपजाळी, रुत रूपाळी, दिवलां वाळी, दीवाळी।
जिय दीवां वाळी, दीवाळी।।4।।

प्रीतां पसरावै, लिछमी लावै, भुआ भगावै, भयजावै।
रिध सिध रळकावै, कोड करावै, मोद भरावै, मनभावै।
खुशियां खळकावै, थिर सुख थावै, देव पुजावै,दिलवाळी।
आणद उपजाळी, रुत रूपाळी, दिवलां वाळी, दीवाळी।
जिय दीवां वाळी, दीवाळी।।5।।

ऊजास उपावै, तमस मिटावै, ज्ञान बढावै, गुणथावै।
हीमत हाथावै, करम करावै, जोश जगावै, जीतावै।
कंथा कमवावै, रुपया लावै, घृत जीमावै, घरवाळी।
आणद उपजाळी, रुत रूपाळी, दिवलां वाळी, दीवाळी।
जिय दीवां वाळी, दीवाळी।।6।।

मानुष जमवारो,अबखो आरो, कंठ कटारो, करमां रो।
अमीय ऊचारो, वात विचारो, धन हमारो, धरमां रो।
कवि 'दीप' कथारो, सगत सहारो,मात उबारो, ममताळी।
आणद उपजाळी, रुत रूपाळी, दिवलां वाळी, दीवाळी।
जिय दीवां वाळी, दीवाळी।।7।।

-:: कलश छप्पय ::-

दीवाळी - दीदार, बंधवां भाव बढावै।
तम हरणो तैवार, मनां रो मैल मिटावै।।
प्रगटै घट प्रकाश, अळगो भजै अंधारो।
अंतस ज्ञान उजास, अमरत मुखड़े उचारो।।
राम थपै अर रावण रुळै, शांति होत नित सौगात।
देवी वरणै कवि 'दीपियो', तो दीवाळी दिनरात।।

दीप सिंह रणधा

कविता : राष्ट्रकाव्य

वेदांग की तरंगिणी संगम से,
बहता विद्यासागर वेदों का।
बुद्ध क्रांति के अभ्युदय से,
मर्दन हुआ वर्ण भेदों का।।

बनी कर्तव्यों की रामायण और,
अधिकारों की महाभारत वरीयता।
आख्यानों के अतुल्य उपहारों से,
सजे महाकाव्यों के रचयिता।।

बन्धन भी सिखाती जीवन को,
मनु-विदुर की स्मृति सहिंता।
महाग्रन्थों के विपुल उपहारों से,
सजे धर्मकाव्यों के रचयिता।।

क्रांतिवीरों में मिश्रण की सतसई,
राष्ट्रप्रेम का प्राण फूँकते थे।
जिनकी चेतावनी से दरबारों में,
स्वाभिमान के कदम रुकते थे।।

आत्मबोध से आत्मचिन्तक बनाता,
अलौकिक उपनिषद का रहस्यवाद।
अक्रिय विश्व के प्रांगण में करती,
गीता कर्म का शंखनाद ।।

जीवन मे जिनके मार्गदर्शन से,
प्रवाहित होती थी सरिता।
महाग्रन्थों के अनुपम उपहारों से,
सजे राष्ट्रकाव्यों के रचयिता।।

- मनु प्रताप सिंह चींचडौली

सवाई जयसिंह की 333वीं जयंती मनाई

राजस्थान की राजधानी एवं विश्व के श्रेष्ठ नगरों में से एक जयपुर की स्थापना करने वाले तथा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी पूर्व महाराजा सवाई जयसिंह की 333वीं जयंती के उपलक्ष में श्री राजपूत सभा भवन जयपुर में 3 नवम्बर को कार्यक्रम कर पुष्पांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सभाध्यक्ष गिरिराज सिंह लोटवाड़ा ने बताया कि महाराजा सवाई जयसिंह मात्र 13 वर्ष की आयु में आमेर की गद्दी पर बैठे। कालांतर में वे दूरदर्शी, आदर्श एवं लोकप्रिय शासक साबित हुए। वे वीर योद्धा के साथ-साथ श्रेष्ठ नगर नियोजक, कुशल प्रशासक एवं महान ज्योतिषिज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। इस अवसर पर सभा की कार्यकारिणी के सदस्यों के साथ-साथ अन्य संस्थानों के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

जैसलमेर में शस्त्र व शास्त्र पूजन

जैसलमेर स्थित राजपूत छात्रावास में दशहरे के अवसर पर शस्त्र एवं शास्त्र पूजन कार्यक्रम रखा गया। जैसलमेर के पूर्व राजघराने के चैतन्यराज सिंह ने इस अवसर पर कहा कि हम सदैव शक्ति के उपासक रहे हैं और शक्ति का उपयोग सदैव आमजन की रक्षा एवं उनके हितों के लिए लड़ने के लिए किया। राजपूत सेवा समिति के कार्यकारी अध्यक्ष दुष्यंत सिंह ने कहा कि हमें पूर्वजों के गौरव की ओर लौटने के लिए हमारे कर्तव्य का पालन करना ही एकमात्र उपाय है। इसके अतिरिक्त सचिव सवाईसिंह देवड़ा, नरेन्द्रसिंह बैरसियाला, पदमसिंह पूनमनगर आदि ने भी अपनी बात कही।

(पृष्ठ चार का शेष)

भ्रामक...

ऐसे लोग कहने को तो अपने आपको बुद्धि के पुजारी मानते हैं लेकिन वास्तव में उनकी बुद्धि पर आत्म हीनता या मिथ्या प्रचार का पर्दा डला रहता है जो उन्हें उनकी स्वयं की जड़ों में मौजूद महानता के दर्शन नहीं करने देता और वे इसे संकुचितता कह दूर भागते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ समाज में आत्म गौरव जागृत कर हमारी जड़ों में मौजूद उस मूल तत्व का सिंचन करता है और हमारे इस आत्महीनता के पर्दे को अनावृत करता है। आवश्यकता है कि हम येनकेन प्रकारेण स्वयं को इस अनावरण के लिए प्रस्तुत करें।

कृतार्थ

प्रभु!
तुम मिलो, ना मिलो,
तुम्हारी राह मिल गई,
तुम्हारा साया मिल गया।
इच्छाएं पूरी हो, न हो
तुम्हें प्राप्त करने की इच्छा
रखने वालों का साथ मिल गया।
राह कटे, न कटे,
शांतिपूर्वक मरने का
आधार मिल गया।
अब क्या चाहिए मुझे?
मैं संतुष्ठ हूं, कृतार्थ बना रहूं,
जो पाया है, उसे खो न दूं।

(नवम्बर 1969 की 'संघशक्ति' के कवर पृष्ठ से समाचार)

हवा के तेज झोंको में बिना बुझे

जो उस प्रण अग्नि में
टिमक टिम जलता रहा।
पथिक! वो कहलाया
इसलिए कि
अंतर चेतना में
निरंतर चलता रहा।
साथी तो साथी
स्वयं के ही द्वारा
घात पर घात पाकर
जो टूट सा गया
पर संभलता रहा।
पथ भटकानें को खड़ा था
उसके लिए जहां
बिछाए पड़े थे
छलनाओं के फूल
पर, वह कुचलता रहा।
कोई रूठे, कई रिश्ते
निभाए बिना ही छूटे
बेपरवाह, इसलिए तो
अंतर वीणा के
कभी तार न टूटे
और वह
जीवन स्वर की
धुन गुनगुनाता रहा।।

-मगसिंह राजमथाई

।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।।

हार्दिक श्रद्धांजलि एवं वंदन

हम सबके प्रेरणास्रोत एवं आदर्श समाजसेवी

पूज्य गुलाबसिंह जी रावलोत

पूर्व अध्यक्ष महाराजा गजसिंह शिक्षण संस्थान, ओसियां, पूर्व अध्यक्ष पेंशनर्स शाखा, ओसियां व सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य के देहावसान पर हार्दिक श्रद्धांजलि एवं सादर वंदन!

श्रद्धानवत

गोपालसिंह भलासरिया, अध्यक्ष महाराजा गजसिंह शिक्षण संस्थान, ओसियां

मोहनसिंह भाखरी	**महेन्द्र सिंह** अनवाणा	**उम्मेदसिंह** डाबड़ी	**हुकमसिंह भाटी** पड़ासला
महावीर सिंह भेरूसागर	**राजेंद्रसिंह शेखावत** विनायक इरिगेशन	**रविद्रसिंह सिसोदिया** निम्बो का तालाब	**हुकमसिंह उदावत** धुंधाड़ा
प्रेमसिंह उदावत धुंधाड़ा	**भोमसिंह मेहानगर** निम्बो का तालाब	**महिपाल सिंह** चिंदड़ी	**बाबूसिंह उदावत** सैनिक नगर, ओसियां
कालूसिंह रायमलवाड़ा	**गोपाल सिंह राठौड़** चांदरख	**ओंकार सिंह** धुंधाड़ा	**घनश्यामसिंह उदावत** पण्डित जी की ढाणी
नरेन्द्र सिंह भाटी मतोड़ा	**पर्वत सिंह भाटी** पल्ली एड	**बलवीर सिंह** तापू सरपंच	**चनणसिंह इन्दा** हेरिटेज साफा हाउस, ओसियां

।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।। ।।श्रीराम।।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org